کا کلنک کا ٹیکہ آپ کے اوپر اس کو آپ دور کیجئے -]

THE DEPUTY CHAIRMAN: I would like to inform the House that the Minister of Education, Mr. K. C. Pant, will lay on the Table, at 2.30 p.m. after lunch, a status report entitled "Challenge of Education—a policy perspective" prepared by the Ministry of Education, before it is released to the press. ढाई बजे पंत जी एजुकेशन पालिसी पर एक पेपर ले करेंग। क्योंकि आडवाणी जी ने कल कहा था कि पहले से सूचना दी जाए इसलिए मैं पहले से बता रही हूं।

The House stands adjourned till 2-30 p.m.

The House then adjourned for lunch at thirty-two minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at thirty-two minutes past two of the clock. **The Vice-Chairman (Shri Chimanbhai Mehta)** in the Chair.

PAPERS LAID ON THE TABLE—*Contd.*

Status Report entitled "Challenge of Education—a policy perspective and related papers"

THE MINISTER OF EDUCATION (SHRI K. C. PANT): Sir, I beg to lay on the Table a copy each of the following papers:—

(i) Status Report entitled "Challenge of Education—a policy perspective", together with Appendices thereto.

(ii) Statement (in English and Hindi) giving reasons for not laying simultaneously the Hindi version of the papers mentioned at (i) above.

[Placed in Library. *See* No. LT-1412/85 for (i) and (ii).]

THE INDIAN RAILWAYS (AMENDMENT) BILL, 1985,—*contd.*

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : माननीय उपसभाध्यक्ष जी, रेलवे की जब बात आती है तो ऐसा लगता है कि देश का कृषि विकास, उद्योग, वाणिज्य और जन-सेवा का सबसे बड़ा साधन जिसमें साढ़े सात हजार करोड़ की पूंजी लगी हुई है, शायद इस देश के 70 करोड़ लोगों के लिए उपयुक्त साधन नहीं हो सकते हैं। इसलिए यह होता है कि रेल मंत्री हर मांग के पीछे फण्ड की शौर्टेज की बात करते हैं। मैं समझता हूं कि यह बड़ी ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि हर चीज के पीछे फण्ड की शौर्टेज की बात कही जाती है। इसलिए मैं कम्बद्ध निवेदन करना चाहूंगा कि फण्ड की शौर्टेज को कुछ न कुछ दूर किया जाना चाहिए और जो सारी चीजें उनकी पूर्ति होनी चाहिए।

जब हम रेलवे के बड़े स्टेशनों पर जाते हैं तो तीन शब्द हमें पढ़ने को मिलते हैं—सुरक्षा, संरक्षण और समय की पाबन्दी। जब मैं सुरक्षा की बात सोचता हूं तो मेरे दिल में एक बात नहीं अनेक बात आती हैं। अगर हम माननीय मंत्री जी के बाल को ही लें अर्थात् फरवरी, मार्च अप्रैल तो हमें पता चलता है कि एक्सीडेन्ट्स की भरमार दिखाई देती है। पचासों जान जाती हैं और सैंकड़ों लोग घायल होते हैं। इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि सुरक्षा के सम्बन्ध में कुछ न कुछ किया जाना चाहिए। आपके कार्यों के द्वारा सुरक्षा की दृष्टि से उठाये कदम परिलक्षित होने चाहिए। जहां तक संरक्षण का सवाल है, आपके अधिकारी संरक्षण का अर्थ भी समझते हैं या नहीं, इसमें मुझे संदेह है। आजकल स्थिति यह है कि रेलवेज में चोरियों, डकैतियों, रोबरीज की भरमार बढ़ती जा रही है। पहले पाकेटमारी इसमें चलती थी लेकिन अब